This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **1212**

Unique Paper Code : **205102** **F**

Name of the Paper : **प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन कविता**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. "'अमीर खुसरो' की कविता लोक संस्कृति का प्रतिबिम्ब है ।" – प्रस्तुत कथन की तर्कसंगत समीक्षा कीजिए । 15

अथवा

विद्यापति की काव्यकला का विश्लेषण कीजिए ।

2. "'समाजसुधारक' के रूप में कबीर आज भी प्रासंगिक हैं ।" – इस कथन के आधार पर कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए । 15

अथवा

"'मृगावती' में लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है ।" – विश्लेषण कीजिए ।

P.T.O.

3. तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल की भावना का विश्लेषण कीजिए । 15

अथवा

"मीरा के काव्य में प्रेम-भावना का सहज वर्णन हुआ है ।" — इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

4. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×7.5=15

(क) की लागि कौतुक देख लौं सखी, निमिष लोचन आध ।

मोर मन-मृग मरम बेधल, विषम बान बेआध ।

गोरस बिरस बासी बिसेखल, छिकहु छाड़ल गेह ।

मुरली धुनि सुनि मो मन मोहल, बिकहु भेल संदेह ।

तीर तरंगिनि कदंब-कानन, निकट जमुना घाट ।

उलटि हेरइत उलटि पर लयो, चरन चीरल काँट ।

सुकृति सुफल, सुनह सुन्दरि, विद्यापति भन सार ।

कंस-दलन गुपाल सुंदर, मिलल नंद कुमार ।

(ख) अब का डरौं डर डरहि समानां

जब थैं मोर तोर पहिचानां ।

जब लग मोर तोर कर लीन्हा, भै भै जनमि जनमि दुख दीन्हां ।

आगम निगम एक करि जानां, ते मनवाँ मन माँहि समांना ।

जब लग ऊँच नीच करि जानां, ते पसुवा भूले भ्रम नानां ।

कहि कबीर मैं मेरी खोई, तबहि राम अवर नहीं कोई ।

(ग) सुनि सुंदर बैन सुधारस–सानें सयानी हैं जानकी जानी भली ।
तिरछे करि नैन, दै सैन, तिन्हैं समुझाइ, कछू मुसुकाइ चली ॥
तुलसी तेहिं औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन लाहु अली ।
अनुराग-तड़ाग में भानु उदैं बिगसीं मनो मंजुल कंजकली ॥

(घ) अब मैं नाच्यो बहुत गुपाल ।
काम, क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल ।
महामोह के नुपुर बाजत, निन्दा-सब्द-रसाल ।
भ्रम-भोयो मन भयो पखावज, चलत असंगत चाल ।
तृष्णा नाद करति घट भीतर, नाना बिधि दै ताल ।
माया को कटि फेंटा बांध्यौ, लोभ-तिलक दियौ भाल ।
कोटिक कला काछि दिखराई जल-थल सुधि नहिं काल ।
सूरदास की सबै अविद्या, दूरि करौ नंदलाल ।

5. किन्हीं **दो** का रचना कौशल (लगभग **150** शब्दों में) निर्देशानुसार लिखिए : 2×7.5=15

(क) को बिरहिणी को दुख जाणै हो ।
जा घट बिरहा सोई लखिहै, कै कोई हरिजन मानै हो ।
रोगी अंतर बैद बसत है, बैद ही औखद जाँणै हो ।
बिरह दरद उरि अंतरि मांहीं, हरि विणि सब सुख काँणै हो ।
सब जग कूड़ो कंटक दुनिया, दरध न कोई पिछाँणै हो ।
मीरा के पति आप रमैया, दूजो नहिं कोई छाँणै हो ।

(मीरा की विरह वेदना)

(ख) जाना तलब मेरी करूँ, दीगर तलब किसकी करूँ,
तेरी जो चिंता दिल धरूँ, एक दिन मिलो तुम आय कर ।
मेरो जो मन तुमने लिया, तुम उठा ग़म को दिया,
तुमने मुझे ऐसा किया, जैसा पतंगा आग पर ।
'खुसरो' कहे बातें गज़ब, दिल में न लावे कुछ अजब,
कुदरत खुदा की है अजब, जब जिव दिया गुल लाय कर ।

(गज़ल का भाषागत सौंदर्य)

(ग) सिखवति चलन जसोदा मैया ।
अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाई धरनी धरे पैया ।
कबहुँक सुंदर बदन बिलोकति, उर आनंद भरि लेति बलैया ।
कबहुँक कुल-देवता मनावति, चिरजीबहु मेरौ कुँवर कन्हैया ।

(बिम्ब-विधान)

(घ) तब लगि ओइं देखीं अपछरा । चेत बिलान मुरुझि कै परा ।
भौंह धनुक गुन बान बिसारे । चतुरि सुभाएँ हनां कटारें ।
(अ)धरन्ह उट्ठा प्रगट (ल)खाऊ । हिंए साल मधि किए अगाऊ ।
दिस्टि बान नहि चूकइ जाने । जइसन रोस पारधी ठाने ।
चक्खत बात चूक नहिं आहा । हनइ लाग निकसइ नहिं चाहा ।

(मृगावती का अलौकिक सौंदर्य)